

ग्रामीण विकास અને હસ્તકલા (ગુજરાતના સંદર્ભમાં)

મૃણાલ પટેલ

પીએચ.ડી. સ્કોલર

સમાજશાસ્ત્ર વિભાગ, ગુજરાત યુનિવર્સિટી

સાર સંક્ષેપ

ગુજરાતમાં હસ્તકલાઓનો સમૃદ્ધ વારસો છે. ગુજરાતની હસ્તકલા ખૂબ જ અનન્ય છે. હસ્તકલા એ જે માનવીના હાથ ધ્વારા તૈયાર કરવામાં આવતી વસ્તુ એ સંસ્કૃતિ અને પરંપરાઓને ધ્યાસ લે છે. આમ દરેક રાજ્યોની પોતાની વિશેષતા હોય છે. ગ્રામીણ ગુજરાતની હસ્તકલા માત્ર સુંદર નથી, પરંતુ વર્ષોથી અને કુશળ કારીગરોથી બનાવવામાં આવેલી સુશોભિત કૃતિઓ છે.

ગુજરાતમાં મોટા ભાગે જે હસ્તકલાના કારીગરો છે. તે ગુજરાતના દરેક જિલ્લાના ગ્રામીણ વિસ્તારમાં વસવાટ કરે છે. આમ તેઓ પોતાની આજીવિકા માટે હસ્તકલાનું કામ કરતા હોય છે તેમજ ગુજરાતના દરેક જિલ્લાના ગામડાઓમાં અલગ-અલગ પ્રકારની હસ્તકલા જોવા મળે છે. ગુજરાતની ગ્રામીણ હસ્તકલા એ ગુજરાતી લોકો અને તેમની સંસ્કૃતિનું જીવન દર્શાવે છે. ગુજરાતના જે નાના ગામડાઓ છે તેમાં અમુક પ્રકારે જે લોકો હાથેથી બનાવેલી ચીજવસ્તુઓનું ઉત્પાદન કરે છે. તેમાં તેમનો અને તેમના ગામનો પણ વિકાસ કરે છે.

આમ આપણે જોઈએ તો પહેલા મોટે ભાગે ગુજરાતમાં શહેર વિસ્તાર કરતા ગામડાઓ વધારે હતા ત્યારે તે ગ્રામીણ વિસ્તારના લોકો પોતે જાતે વસ્તુ બનાવતા હતા અને તે એકબીજાને વસ્તુઓ સામે વસ્તુની આપ-લે કરતા હતા. તે સમયમાં હસ્તકલા એ ગ્રામીણ વિકાસ માટે મહત્વની ભૂમિકા ભજવતું હતું. પણ આજના સમયમાં જે-તે ગામડાઓ શહેરો સાથે જોડાવા લાગ્યા અને મહાનગર પાલિકામાં તેમનો સમાવેશ થવા લાગ્યો. પણ આજના સમયમાં પણ ગુજરાતના અમુક જિલ્લાના ગામડાઓ છે તે હસ્તકલા ઉપર વધારે ભાર મૂકે છે તેમજ આ ગ્રામીણ ગુજરાતના જે હસ્તકલાના કારીગરોમાં આદિવાસી અને મુસ્લિમ પ્રજા પણ કાર્ય કરી રહી છે. ગુજરાતની હસ્તકલામાં જે ગ્રામીણ વિસ્તારના કારીગરો છે તેઓને ગુજરાત સરકાર ધ્વારા તેઓને ઘણી યોજનાઓનો લાભ આપવામાં આવે છે. જેથી તેઓનો અને તેમના ગામોનો વિકાસ થાય.

પ્રસ્તુત અભ્યાસમાં જે ગ્રામીણ વિકાસમાં ગુજરાતનું હસ્તકલાનું વિશ્લેષણ કરવાનો પ્રયાસ કર્યો છે તેમજ આ અભ્યાસમાં ગૌણ માહિતીનો ઉપયોગ કરેલ છે.

આવીરૂપ શબ્દો : ગ્રામીણ વિકાસ, વિકાસ, હસ્તકલા

ગુજરાત સમૃદ્ધ વૈવિધ્ય ધરાવતી ભારતના અગ્રણી રાજ્યોમાંનું એક છે. કલા અને સંસ્કૃતિનો વારસો તે પેઢીઓ ધ્વારા પુષ્કળ પરંપરાગત હસ્તકલા ધરાવે છે. કુશળ કારીગરોના કલાત્મક રીતે ઉત્પન્ન થયેલા લેખો ફક્ત વૃદ્ધિ માટે જ નહિ પરંતુ તે સૌંદર્ય પણ મૂલ્યવાન ઉપયોગીતાઓ માટે નોંધપાત્ર રીતે રચાયેલ છે. જોકે આજે આ આધુનિકરણ અને વૈશ્વિકીકરણનો યુગ પરંપરાગત હસ્તકલા ઉત્પાદનો ધરાવે છે.

ग्रामीण हस्तकलांना कारीगरो नोंधपात्र सुधारानोना कोड संकेत दर्शावता नथी. नाना कारीगरोने आगामी पेढी माटे तेमना हस्तकलामां तेजस्वी भावि देभातु नथी परंतु तेओ अेवा व्यवसाय तरङ्ग अनिच्छनीय वलण धरावे छे. जे अन्य कोड नथी ओछा शिक्षित वलण धरावता अने तेमने भुल्ला विकल्प समयनी मांग साथे आगण वधवानी असमर्थता, आवा संजोगोमां नवी नवी व्यूह रचनाओ टकावी राभवा अने विकास माटे आवश्यक छे. आम परंपरागत ग्राम उद्योगो अने हस्तकला के जेथी तेमनो विशाण वारसो उपेक्षित नथी पण तेना माटे वधु विस्तृत अने वधु अभिगमनी आवश्यकता छे. विकास कारीगरो वय्ये सांस्कृतिक उद्योग साहसिकता ध्वारा वधारो थवो जोड्ये. ज्वनपर्यंतताने टकावी राभवा माटे नीतियो विस्तृत करवी अने मजबूत करवी जे तेओ पहिलेथी कुशल, कुदरती उत्पादक रीते निपूरु अने प्रशिक्षित होय. जो आवा कारीगरो तेमनां परंपरागत स्वाद जाणवी राभवो पडे तेमज आधुनिक वलणोने ध्यानमां राभीने नवीनताओ तेमनी ओणभमां अनन्य होवाथी महान कलाकारो बनवानी तेमनी पासे यमकती तक छे.

ज्यारे आपणे हस्तकला विशे कल्पना करीअे छीअे त्यारे "हेन्डीक्रेफ्ट" शब्द पोते ज उत्पन्न करे छे. सुंदर चित्र-सौंदर्यलक्षी रंग, कलात्मक स्वादिष्ट अने आकर्षक देभाव मानव जातिनी शत्रुआतथी हस्तकला जाणीजोडने अथवा अजाणता मानव ज्वननो अेक अभिन्न भाग बनी गयो छे. जो के समय पसार साथे डिलसूडी, सुसंगतता, स्वरूप अने स्वभाव बदलाता रहे छे. हस्तकला अे प्रतिबिंबित करे छे के कोड पण संस्कृतिना विशिष्टताओ अने तेना मानसिक कंपनने व्यक्त करे छे. हस्तकला कलाकारोनी सांस्कृतिक भ्रजानानी मौन प्रवकता छे. कोड पण समुदाय अथवा राष्ट्र जे भातर नाभीने सांस्कृतिक संपतिनुं पालन करे छे. हस्तकला लावण्यनो अेक शक्तिशाणी स्रोत छे जे आपणा संस्कृति अने इतिहासने ज्वंत राभे छे.

२०११नी वस्ती गणतरी मुजब भारतनी कुल वस्ती ५८.८४% गामोमां रहे छे. तेथी राष्ट्रीय विकास माटे कोडपण व्यूहरचना साथे संकणावेलुं होवुं ज जोड्ये तेमज ग्रामीण समाजनो विकास व्यवहारिक रीते जमीननी वास्तविकतामां जोवानुं छे. आजना गुजरातना गामडाओना मुद्दा पर ध्यान केन्द्रीत करवा माटे गरीबीनी दुर्घटना, बेरोजगारी, निरक्षरता, नबणी आरोग्यता अने स्वच्छतानी माणभाडीय सुविधाओ समस्याओ अने अे धणा जे ग्रामीण गुजरातना विकासमां वधारो करे छे. तेथी तेमना ज्वनघोरणने प्रतिङ्गण असर करे छे. गामडाओ साया अर्थमां स्वतंत्र थया होय छे. जो ते आत्मनर्भरि होय छे. तेथी तेनी कल्पना ग्रामीण विकास भूव व्यापक अने व्यापक हता. आर्थिक परिस्थितियो पर भार मूकयो हतो. राजकीय, शैक्षणिक, पारिस्थितिक अने आध्यात्मिक परिणामोने आवा आदर्श मेणववा माटे चोक्कस स्थान लेवुं पडे. गांधीजुनो भ्याल टकी शके अेवा गामोनो विकास अे गांधीजु ग्रामीण पुनःनिर्माण अने ग्रामीण उन्नति ईच्छता हता. ग्रामीण उद्योगोने पेढीथी पेढीओ सुधी प्रचार ध्वारा भास करीने विकासशील ग्रामीण गुजरातना अर्थतंत्रने मजबूत बनाववा अने आत्मनर्भरि अे गांधीजुअे ग्रामीण उद्योगोना विकास पर भार मूकयो जेम के भाडी, हेन्डलूम अने हस्तकला.

ग्रामीण विकास अेक प्रक्रिया छे जेनो उद्देश सुभाकारीने सुधारवानो छे. ग्रामीण विस्तारोमां सामूहिक प्रक्रिया ध्वारा लोकोनी आत्मसाक्षात्कार बनी रहे छे. विश्व बैंक ग्रामीण विकासनो अर्थ ओछी आवकना ज्वनघोरणोने सुधारवानो छे. हस्तकला क्षेत्रमां ग्रामीण कारीगरोनी सातत्यता परनो अब्यास अे ग्रामीण विस्तारमां रहेता लोको अने ग्रामीण विकासनी प्रक्रिया करवा माटे स्व-टकाउ अे ग्रामीण विकासनो प्राथमिक उद्देश्य सुधारवानो छे. भोराक, कपडा, आभ्रय, शिक्षण अने रोजगारी पूरी पाडीने ज्वनघोरणो अे ग्रामीण समूहना उत्पादकतामां वधारो तेमज गरीबी घटाववा माटे लोकोने भातरी आपवा माटे आयोजन अने नर्णयि लेवामां ग्रामीण विकासनी भागीदारी होय छे.

भुरन्डलेन्ड कमिशन अे डेवलोपमेन्ट व्याख्यायित कर्युं छे. ते विकास भविष्यनी पेढीनी क्षमता साथे समाधान

कर्या विना हाजरनी जर्रियातने पहोयी वणे छे. पोतानी जर्रियातो पुरी करवा माटे टकाव विकास अे परिवर्तननी प्रकिया छे. संसाधनोनुं शोषण, रोकणोनी दिशा, तकनीकीनुं अभिगम विकास अने संस्थाकीय परिवर्तन अे बन्ने सुमेणमां छे. मानव जर्रियातो अने महत्वकांक्षाने पहोयी वणवानी भावि संभवितता अे विकासना गांधीवादी परिप्रेक्ष्य आर्थिक, सामाजिक अने ते पण टकाउ छे. भास करीने पारिस्थितिक रीते तेमणे कुटीर उद्योगना प्रोत्साहननी हिमायत करी हती. ग्राम उद्योग अने देशमां तेना उत्पादनोनी उपयोग अे ग्रामीण उद्योगोनी आर्थिक प्रवृत्तियोना विकेन्द्रीकरणेने प्रोत्साहित करे छे. तेथी आवक पेदा थाय छे. आ उद्योगोमां भूय मोटी संख्यामां ग्रामीण लोकोमां वितरित थाय छे. तेथी गांधीजुअे हमेशा विचार्युं के मात्र गाम आधारित उद्योग ज पूरुं पाडशे अे बधा माटे काम करे छे.

जेम आपणे बधा जाणीअे छीअे के हस्तकला ध्वारा मशीनरीनो उपयोग नाश पामेल छे. ईजिप्तिश शासको गांधीजु मूडीना साधन अने मशीनना विकास सामे हता. आर्थिक उद्योगोना पश्चिमी मोडेलना आधारे लक्षित उद्योग रोजगारीनी तकोमां घटाडो. गांधीजुअे अभिप्राय आप्यो के मोटा पायाना उद्योगो, मूडी धनिष्ठ होवाथी मजुर विजेरी नाभे छे. लोकने आणसु बनावे छे अने अेकाग्रतामां सहाय करे छे. आम ग्रामीण लोकोने बेरोजगार राभ्या हता. ग्रामीण उद्योगोनी सामे कौटुंबिक श्रम पर आधारित छे. तेने ओछी मूडीनी जर्र करे. रोकण स्थानिक बजारो अने मालसामानमांथी कायो माल पण अेकत्रित करवामां आवे छे तेमज उत्पादित स्थानिक बजारोमां वेचाय छे. तेथी उत्पादननी कोड समस्या नथी तेमज आ ग्रामीण लोको आर्थिक रीते सध्धर बने अने तेमना विकासमां प्रगति थाय छे.

ग्रामीण हस्तकलाना कारीगरो अे कुशण कार्यकर छे. जे हस्तकलानी वस्तुओनी पोतानी कारीगरी होय छे. तेमां कुदरती संशोभन ते हाथना साधनोनी उपयोग करीने व्यक्तित्व प्रदान करे छे. दरेक वस्तु माटे तेनी अेक विशिष्टता होय छे. आज्जे हस्तकलाना कारीगरो अे आपणा समाजो अेक महत्वपूर्ण भाग छे. तेमना ध्वारा अमने सुंदर रचनात्मक उत्पादनोनुं प्रदान करे छे. ते आपणी सौंदर्यलक्षी जिवनने वधारे छे. उपरांत तेओ आपणा राष्ट्रीय अर्थतंत्रमां नोधपात्र झणो आपनारा छे. हस्तकला ध्वारा बनाववामां आवा ग्रामीण कारीगरोअे विकासनी रुपरेणामां विशिष्ट स्थान बनाव्युं छे. "आर्टिजन" शब्दने उपयोग सामान्य लोको साथे काम करता लोकोना संदर्भमां थाय छे अथवा मूणभूत जर्रियातोनी वस्तुओ बनाववा माटे सरण साधनो ते मुभ्यत्वे स्थानिक रीते उपलब्ध छे. संसाधनो अने मशीननी सहाय विना मूल्यवान उत्पादनो बनावे छे. आम आ कुशण कारीगरोअे मेन्युअल वर्कर्स तरीके ओणभाय छे.

गुजरातना ग्रामीण जे हस्तकलाना कारीगरोने मूणभूत रीते गामडामां रहे छे ते परिपूर्णता माटे काम करे छे. ग्रामजोनी जर्रियात तेओ उत्पादन करीने कृषि क्षेत्रनी जर्रियात पूरी करे छे. गुजरातमां जे मोटेभागे, हस्तकलानी चीजवस्तुओ ग्रामीण समाजमां तेओनुं उत्पादन थतुं होय छे. आम ते लोकोनुं जे हस्तकलानुं काम अे पेढीओथी यालतु आवतुं होय छे. परंपरागत आर्ट अने हस्तकला हमेशा प्रदेशना विकास माटे विशिष्ट रही छे. ग्रामीण गुजरात ते हमेशा भास हस्तकलानी पूजा करे छे. तेमने तेमनी आजुविका माटे कमाणी करवामां मदद करे छे अने योक्कसपणे तेनी ओणभ करवामां आवे छे. गुजरातमां घणा गामडायो तेमना पूर्वजोना कार्यने जाणवी राभवा अने वधु टकाउपणुं अने तेमनी निकटता माटे अेक प्लेटफ़ोर्म आपवानो प्रयास करी रहया छे. तेवी ज रीते गुजरात सरकारे राज्यना परंपरागत हस्तकलाने ओणभी काढी छे.

गुजरातमां मोटे भागे जे हस्तकलानी चीजवस्तुओ जोवा मणे छे अने ते जे उत्पादन थाय छे तेमां ते गुजरातना ग्रामीणमां तेओनुं मोटे भागे उत्पादन थाय छे. गुजरातमां गामडायोनी संख्या भूय ज वधारे छे तेमज अलग अलग विस्तार प्रमाणे जोड्ये तो ते लोकोनी हस्तकलामां वैविध्यता पण जोवा मणे छे.

गुजरातना जे विविध गामडाओ छे तेमां आ प्रकारनी हस्तकला जेवा मणे छे.

गुजरातमां जे टाई एन्ड डाई बांधणीनुं जे उत्पादन थाय छे अे जामनगर अने कच्छना गामडामां तेनुं उत्पादन थाय छे.

बीड वर्क अे मोतीकामनुं हस्तकलानी वस्तुमां जे रमकडा, जवेलरी, याकणो, तोरणो जेवी वस्तुओ अे दाहोद, पंचमहाल अने वडोदरानी आसपासना गामडामां थाय छे अने तेमां आदिवासी कारीगरो पण आ वस्तुनुं उत्पादन करे छे.

पटोणा सारी जे पाटणना साल्वी समुदाय ध्वारा उत्पादन थाय छे अने सुरेन्द्रनगरनी आसपासना गामडामां आ पटोणा सारीनुं उत्पादन थाय छे. आ हस्तकलामां भूष ज मूल्यवान गणवामां आवे छे.

लाकडानुं काम अेटले के दिवाल पर लगावामां आवता वोल पीसमां कोतरणी, रमकडा, इर्नियर अने जरुरीयात साधनो आ गुजरातमां लावनगर, संभेडा अने पेशापुर जेवा गाममां थाय छे.

ब्लोक प्रिन्टींग आ जे काम छे अे वर्षो जूनुं छे. ते कच्छना धमडका अने अजरभपुर गाममां वर्षोथी थाय छे अने ते भूष ज अनन्य छे.

भरतकाम अे गुजरातना धणा बधा जिल्लाओना गामडाओमां थाय छे. पण ते भरतकाम तेमनी ज्ञातिना आधारे ओणभाता होय छे. गुजरातमां भरतकाम अे कच्छना दरेक गामडामां थाय छे तेमज सौराष्ट्रना अमरेली, जुनागढना गाममां थाय छे अने बनासकांठा गामडाओमां आ भरतकाम करता हस्तकलाना कारीगरो जेवा मणे छे.

यामडानुं काम अे गुजरातनुं भावडा गामनुं भूष ज प्रयलित छे. ते उत्पादनमां बेग, पर्स, यप्पल, मोजडी, बेल्ड, मीरर डेम वगेरे यामडामांथी उत्पादन करे छे.

पेयवर्क अे गुजरातनुं सौथी जनुं वर्क छे. तेमां सौराष्ट्र, बनासकांठा, पाटण अने कच्छ जिल्लाना गामडानी महिलाओ ध्वारा उत्पादित करवामां आवे छे.

रोगान पेईन्टींग अे आभा गुजरातमां जे कच्छ जिल्लाना भूष गाम नजुक नीरु गाममां, भत्री समाजना कारीगर ध्वारा तेनुं उत्पादन थाय छे.

वालीं पेईन्टींग अे आदिवासी कला छे. जे गुजरातनी सरहदे आवेला गामडाओना आदिवासी सरहदे आवेला गामडाओना आदिवासी लोको ध्वारा आ वालीं पेईन्टींग तैयार करवामां आवे छे.

आम गुजरातना विविध गामडाओमां विविध प्रकारनी हस्तकलानुं उत्पादन थाय छे. ते माटे तेमना चोककस प्रकारे तेमनो विकास थाय ते माटे गुजरात सरकार ध्वारा अेक निगम उभुं करवामां आव्युं छे. ते निगमनुं नाम गुजरात राज्य हेन्डलूम अने हस्तकला विकास निगम लि. १९७३ मां आ निगमनी विकासना उद्देश्य साथे स्थापना करी हती. राज्यना हस्तकला अने हेन्डलूमना कारीगरोने आवरी लीधा छे. आजे हस्तकलाना कारीगरोने तेमना विकास माटे विविध योजनाओ आपीने तेमने तालमी पण आपवामां आवे छे. आ जे आ हस्तकलानी जे चीजवस्तुनुं उत्पादन करे छे तेना वेयाण करवा माटे गुजरात सरकार ध्वारा तेमने चोककस प्रकारनुं स्थान आपे छे. जेथी तेओनो विकास थाय अने तेमनी पाछण तेमना गामनो पण विकास थाय छे.

उपसंहार :

गुजरातमां हस्तकला अे भूषज ग्रामीण गुजरात माटे भूषज तेना विकासमां महत्वनो ज्ञाणो रहयो छे. गुजरातना गामडाओ अन्य राजयोना गामडाओ करतां भूष ज वैविध्यता धरावे छे. तेथी ग्रामीण विकासमां हस्तकला अे महत्वनी भूमिका लजवे छे.

संदर्भ सूचि

<https://blog.thedeccanodyssey.com/gujarati-handicrafts/>
<https://shodhganga.iNFlibnet.ac.in>
www.ruralmarketing.in
Gandhi, M.K. (1936), Harijan – 29-8-1936